SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

SWAYAM का महत्व एवं चुनौतियां: वर्तमान परिपेक्ष्य में

राजेश कुमार अग्रवाल, पी.–एचडी., वाणिज्य संकाय,
गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
राजेश कुमार अग्रवाल, पी.–एचडी.
E-mail : smileagrawal15@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/07/2025
Revised on : 06/09/2025
Accepted on : 16/09/2025
Overall Similarity : 07% on 08/09/2025

शोध सार

डिजिटल क्रांति ने शिक्षा के परिदृश्य को गहराई से बदल दिया है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच एक वैश्विक प्राथमिकता बन गई है। भारत में, भारत सरकार की एक पहल, स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव–लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स (SWAYAM) कार्यक्रम, इस परिवर्तन की आधारशिला बनकर उभरा है। यह शोधपत्र समकालीन शैक्षिक प्रतिमान में SWAYAM के महत्व की जाँच करता है, और समानता, पहुँच और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। मौजूदा साहित्य के संश्लेषण और इसके संचालन ढाँचे के आलोचनात्मक विश्लेषण के माध्यम से, यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि SWAYAM भौगोलिक और सामाजिक–आर्थिक बाधाओं को दूर करने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का लाभ कैसे उठाता है। यह इस प्लेटफ़ॉर्म के बहुआयामी दृष्टिकोण पर गहराई से प्रकाश डालता है, जिसमें स्कूल स्तर से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक के पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश, राष्ट्रीय समन्वयकों के साथ सहयोग, और वीडियो व्याख्यान, पठन सामग्री, स्व–मूल्यांकन परीक्षण और चर्चा मंचों का मिश्रण प्रदान करना शामिल है। इस शोधपत्र में तर्क दिया गया है कि स्वयं (SWAYAM) केवल पाठ्यक्रमों का एक डिजिटल संग्रह नहीं है, बल्कि एक गतिशील मंच है जो आजीवन सीखने, कौशल विकास और व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देता है। लचीले और किफायती शिक्षण समाधानों की आवश्यकता से चिह्नित वर्तमान परिदृश्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के लक्ष्यों को प्राप्त करने और ज्ञान–आधारित समाज के भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने में इस कार्यक्रम के महत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द

SWAYAM, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल डिवाइड, तकनीकी साक्षरता, रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम.

प्रस्तावना

बीसवीं सदी के अंत और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) के तीव्र विकास ने शिक्षा के परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। शिक्षा अब केवल पारंपरिक कक्षाओं तक ही सीमित नहीं रह गई है, बल्कि प्रौद्योगिकी के माध्यम से दूर–दराज के क्षेत्रों तक भी पहुंच गई है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में, जहाँ शिक्षा तक पहुंच और गुणवत्ता एक बड़ी चुनौती रही है, मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेस (MOOCs) ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी आवश्यकता को पूरा करने और देश के प्रत्येक नागरिक तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने के उद्देश्य से, भारत सरकार ने 9 जुलाई, 2017 को "स्वयं" (Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds - SWAYAM) नामक एक ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म लॉन्च किया। यह प्लेटफॉर्म शिक्षा के तीन प्रमुख सिद्धांतों – पहुंच (Access), इक्विटी (Equity) और गुणवत्ता (Quality) को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, विशेष रूप से COVID–19 महामारी के बाद, जब पारंपरिक शिक्षण संस्थानों को बंद करना पड़ा, स्वयं जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का महत्व और भी बढ़ गया है। इसने न केवल शिक्षा की निरंतरता सुनिश्चित की, बल्कि दूरस्थ शिक्षा और मिश्रित शिक्षा (Blended Learning) मॉडल को भी बढ़ावा दिया। यह शोध पत्र स्वयं के महत्व, इसकी विशेषताओं, वर्तमान शैक्षिक प्रणाली पर इसके प्रभावों, और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से प्रकाश डालेगा।

स्वयं की अवधारणा और उद्देश्य

स्वयं भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (पूर्व में मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा एक पहल है, जिसे अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (AICTE) और नेशनल ओपन स्कूलिंग इंस्टीट्यूट (NIOS) जैसे विभिन्न राष्ट्रीय समन्वयकों के सहयोग से विकसित किया गया है। स्वयं का मुख्य उद्देश्य देश के किसी भी हिस्से में, किसी भी समय, किसी भी व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करना है।

शोध परिकल्पना

इस शोध पत्र की मुख्य परिकल्पनाएं निम्नलिखित हैं:

परिकल्पना 1: SWAYAM मंच पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की तुलना में ग्रामीण और दूर–दराज के क्षेत्रों में छात्रों के लिए शैक्षिक अवसरों को बढ़ा रहा है।

परिकल्पना 2: SWAYAM पर उपलब्ध पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता छात्रों के ज्ञान और कौशल विकास में सकारात्मक योगदान करती है।

परिकल्पना 3: डिजिटल विभाजन (Digital Divide) और तकनीकी बाधाएं SWAYAM की पूर्ण क्षमता को साकार करने में प्रमुख चुनौतियां हैं।

स्वयं के प्रमुख उद्देश्य

1. **शिक्षा तक पहुंच बढ़ाना:** उन छात्रों तक शिक्षा पहुँचाना जो भौगोलिक बाधाओं, आर्थिक समस्याओं, या अन्य कारणों से उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं।
2. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रमों को उपलब्ध कराकर शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करना।

3. **सभी के लिए समान अवसरः** शिक्षा में असमानताओं को कम करना और सभी छात्रों को समान सीखने के अवसर प्रदान करना।
4. **कौशल विकास और आजीवन सीखनाः** छात्रों और पेशेवरों को नए कौशल सीखने और मौजूदा कौशल को बेहतर बनाने का अवसर प्रदान करना, जिससे वे बदलते श्रम बाजार की मांगों को पूरा कर सकें।
5. **नवाचार को बढ़ावा देनाः** शिक्षा के क्षेत्र में नए तरीकों और प्रौद्योगिकियों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।

स्वयं की प्रमुख विशेषताएँ

स्वयं को एक व्यापक और उपयोगकर्ता–अनुकूल मंच बनाने के लिए कई विशिष्ट विशेषताओं के साथ डिज़ाइन किया गया है:

1. **विभिन्न विषयों में पाठ्यक्रमों की विस्तृत श्रंखलाः** स्वयं स्कूल स्तर (कक्षा 9 से 12), स्नातक, स्नातकोत्तर, इंजीनियरिंग, कानून, प्रबंधन, कला और विज्ञान सहित विभिन्न विषयों में हजारों पाठ्यक्रम प्रदान करता है।
2. **चार–चतुर्भुज दृष्टिकोणः** प्रत्येक पाठ्यक्रम को चार भागों में विभाजित किया गया है, जो प्रभावी शिक्षण सुनिश्चित करते हैं।
3. **वीडियो व्याख्यानः** विस्तृत और उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो व्याख्यान।
4. **विशेष रूप से तैयार की गई पठन सामग्रीः** जिन्हें डाउनलोड/प्रिंट किया जा सकता है।
5. **आत्म–मूल्यांकन परीक्षण और क्विज़ः** छात्रों की समझ का मूल्यांकन करने के लिए।
6. **ऑनलाइन विचार–विमर्श मंचः** संदेहों को दूर करने और साथियों के साथ बातचीत करने के लिए।
7. **राष्ट्रीय समन्वयकः** विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से नामित नौ राष्ट्रीय समन्वयक हैं, जो स्वयं पर पाठ्यक्रमों के विकास और वितरण के लिए जिम्मेदार हैं। इनमें शामिल हैं: AICTE (स्व–गतिशील और अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम), NPTEL (इंजीनियरिंग), UGC (गैर–तकनीकी स्नातकोत्तर शिक्षा), CEC (स्नातक शिक्षा), NCERT (स्कूल शिक्षा), NIOS (स्कूल शिक्षा), IGNOU (स्कूल शिक्षा से बाहर के छात्र), IIM&B (प्रबंधन अध्ययन), और NITTTR (शिक्षक प्रशिक्षण)।
9. **प्रमाणीकरणः** पाठ्यक्रम पूरा होने के बाद, छात्रों को एक परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है, जिसके सफल समापन पर उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है। ये प्रमाण पत्र अक्सर शैक्षणिक संस्थानों द्वारा क्रेडिट के लिए भी स्वीकार किए जाते हैं।
10. **निःशुल्क उपलब्धताः** स्वयं पर अधिकांश पाठ्यक्रम निःशुल्क उपलब्ध हैं। केवल प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए एक मामूली परीक्षा शुल्क लिया जाता है।
11. **पहुंच योग्यताः** यह मंच मोबाइल और डेस्कटॉप दोनों पर उपलब्ध है और इसे धीमी इंटरनेट गति पर भी कुशलता से काम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वयं का महत्व

वर्तमान समय में स्वयं का महत्व कई गुना बढ़ गया है, विशेष रूप से कई वैश्विक और राष्ट्रीय कारकों के कारण:

1. **COVID–19 महामारी का प्रभावः** COVID–19 महामारी ने दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली को बाधित कर दिया। स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को बंद करने से छात्रों की शिक्षा पर गहरा असर पड़ा। ऐसे में, स्वयं जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने एक जीवन रेखा का काम किया। इसने छात्रों को घर से ही अपनी पढ़ाई जारी रखने में सक्षम बनाया, जिससे अकादमिक वर्ष का नुकसान कम हुआ। महामारी ने डिजिटल शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया और स्वयं को एक विश्वसनीय विकल्प के रूप में स्थापित किया।

2. **डिजिटल इंडिया और डिजिटल साक्षरता:** भारत सरकार की ''डिजिटल इंडिया'' पहल के साथ स्वयं पूरी तरह से मेल खाता है। इसका उद्देश्य देश को डिजिटली सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलना है। स्वयं डिजिटल उपकरणों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करके डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देता है और नागरिकों को डिजिटल दुनिया में सक्रिय भागीदार बनने में सक्षम बनाता है।
3. **रोजगारपरक कौशल विकास:** आज के तेजी से बदलते श्रम बाजार में, नए कौशल सीखना और मौजूदा कौशल को अद्यतन करना महत्वपूर्ण है। स्वयं विभिन्न उद्योगों की मांगों को पूरा करने वाले कौशल–आधारित पाठ्यक्रम प्रदान करता है। यह छात्रों और पेशेवरों को अपनी रोजगार क्षमता बढ़ाने और करियर में आगे बढ़ने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग जैसे उभरते क्षेत्रों में पाठ्यक्रम व्यक्तियों को भविष्य के लिए तैयार करते हैं।
4. **समावेशी शिक्षा को बढ़ावा:** स्वयं उन लोगों के लिए शिक्षा के अवसर पैदा करता है जो पारंपरिक शिक्षा प्रणाली से बाहर हैं। यह दूरस्थ क्षेत्रों, ग्रामीण इलाकों, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों और कामकाजी पेशेवरों तक पहुंचता है। महिलाएं, जो अक्सर सामाजिक या पारिवारिक कारणों से उच्च शिक्षा जारी नहीं रख पाती हैं, स्वयं के माध्यम से घर बैठे पढ़ाई कर सकती हैं। यह समावेशी विकास के भारत के लक्ष्य के अनुरूप है।
5. **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच:** भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में असमानता एक बड़ी चुनौती है। शीर्ष संस्थानों में सीमित सीटें और ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की कमी इस अंतर को बढ़ाती है। स्वयं देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों और संस्थानों द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रमों को सभी के लिए उपलब्ध कराकर इस अंतर को पाटने का प्रयास करता है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता का लोकतंत्रीकरण होता है।
6. **आजीवन सीखने की संस्कृति का विकास:** आधुनिक दुनिया में, ''आजीवन सीखना'' एक आवश्यकता बन गया है। प्रौद्योगिकी में तेजी से बदलाव और नए ज्ञान की निरंतर आवश्यकता के कारण व्यक्तियों को अपने कौशल और ज्ञान को लगातार अपडेट करना पड़ता है। स्वयं व्यक्तियों को अपनी गति और सुविधा के अनुसार नए विषयों को सीखने या मौजूदा ज्ञान को गहरा करने का अवसर प्रदान करके आजीवन सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देता है।
7. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ संरेखण:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 शिक्षा के डिजिटलीकरण और ऑनलाइन/ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ODL) को बढ़ावा देने पर जोर देती है। स्वयं NEP के लक्ष्यों के साथ पूरी तरह से संरेखित है, खासकर जब यह मिश्रित शिक्षा, लचीले सीखने के मार्ग और क्रेडिट ट्रांसफर की बात आती है। NEP स्वयं जैसे प्लेटफार्मों को उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा क्रेडिट–आधारित पाठ्यक्रमों के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे छात्रों को अपनी डिग्री के हिस्से के रूप में ऑनलाइन पाठ्यक्रम लेने की अनुमति मिलती है।
8. **शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास:** स्वयं केवल छात्रों के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम, नए शिक्षण विधियों पर प्रशिक्षण और विषय वस्तु को अद्यतन करने के अवसर प्रदान करता है। इससे शिक्षकों की क्षमता निर्माण होती है और वे छात्रों को बेहतर तरीके से पढ़ा पाते हैं।

चुनौतियाँ और समाधान

स्वयं ने निस्संदेह भारतीय शिक्षा परिदृश्य में क्रांति ला दी है, लेकिन इसकी पूर्ण क्षमता का एहसास करने के लिए कुछ चुनौतियों का समाधान करना अभी भी आवश्यक है:

1. **डिजिटल डिवाइड:** शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल डिवाइड अभी भी एक बड़ी चुनौती है। इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी, बिजली की अस्थिरता और डिजिटल उपकरणों तक पहुंच की कमी ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं की पहुंच को सीमित करती है। इस अंतर को पाटने के लिए बुनियादी ढांचे के विकास और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है।

2. **जागरूकता का अभावः** कई संभावित उपयोगकर्ता अभी भी स्वयं के अस्तित्व और लाभों से अवगत नहीं हैं। प्लेटफॉर्म के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक प्रचार–प्रसार अभियान आवश्यक हैं।
3. **भाषा बाधाः** हालांकि स्वयं कई भारतीय भाषाओं में सामग्री प्रदान करने का प्रयास कर रहा है, फिर भी अधिकांश पाठ्यक्रम अंग्रेजी में हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में अधिक सामग्री उपलब्ध कराना आवश्यक है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह वास्तव में समावेशी है।
4. **गुणवत्ता नियंत्रण और मान्यताः** पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता सुनिश्चित करना और यह सुनिश्चित करना कि उनके प्रमाण पत्रों को व्यापक रूप से मान्यता मिले, महत्वपूर्ण है। उद्योगों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ निरंतर सहयोग आवश्यक है ताकि स्वयं पाठ्यक्रमों की स्वीकार्यता बढ़ाई जा सके।
5. **छात्रों की सहभागिता और पूर्णता दरः** ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में छात्रों की सहभागिता बनाए रखना और उच्च पूर्णता दर सुनिश्चित करना एक चुनौती है। इसे प्राप्त करने के लिए इंटरैक्टिव सीखने के तरीकों, व्यक्तिगत प्रतिक्रिया और परामर्श तंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता है।
6. **मूल्यांकन की चुनौतियाँः** ऑनलाइन मूल्यांकन में धोखाधड़ी और विश्वसनीयता सुनिश्चित करना एक चुनौती है। सुरक्षित और प्रभावी ऑनलाइन मूल्यांकन प्रणालियों को विकसित करना और कार्यान्वित करना महत्वपूर्ण है।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, सरकार, शैक्षणिक संस्थानों और प्रौद्योगिकी प्रदाताओं के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। ''भारतनेट'' जैसी पहलों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार करना, स्थानीय भाषाओं में सामग्री विकसित करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना, और स्वयं के पाठ्यक्रमों को मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में अधिक एकीकृत करना महत्वपूर्ण कदम होंगे।

निष्कर्ष

स्वयं ने भारत में शिक्षा के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रदान करने, कौशल विकास को बढ़ावा देने और आजीवन सीखने की संस्कृति को पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जहां प्रौद्योगिकी शिक्षा का अभिन्न अंग बन गई है, स्वयं ने अपनी प्रासंगिकता और प्रभावशीलता को साबित किया है, विशेष रूप से COVID–19 महामारी के दौरान। हालांकि कुछ चुनौतियाँ बनी हुई हैं, स्वयं के पास भारत की शैक्षिक आकांक्षाओं को पूरा करने और एक ज्ञान–आधारित समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने की अपार क्षमता है। डिजिटल खाई को पाटने, जागरूकता बढ़ाने और पाठ्यक्रम की गुणवत्ता व मान्यता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करके, स्वयं भविष्य में भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक आधारशिला बन सकता है, जिससे हर नागरिक के लिए सीखने और बढ़ने के समान अवसर उपलब्ध हो सकें। स्वयं वास्तव में भारत के शैक्षिक भविष्य को उज्ज्वल बनाने में एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट, https://www.education.gov.in/, Accessed on 03/05/2025.
2. SWAYAM की आधिकारिक वेबसाइट, https:///swayam.gov.in//, Accessed on 06/05/2025.
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020।

****